

मुखौटा-कला के विविध आयाम : एक अध्ययन

मीनाक्षी

मुखौटा शब्द का सामान्य अर्थ है- जो मुख को ढकने का कार्य करता है तथा इसका विशिष्ट अर्थ है- जो व्यक्तित्व को छिपाने का कार्य करे, वह मुखौटा कहलाता है। व्यक्तित्व को छिपाने के लिए मुखौटे के साथ-साथ धारण की गई पोशाक एवं व्यवहार आदि भी मुखौटे के अनुरूप ही होना चाहिए। मुखौटा एक ऐसा आवरण है जिसका प्रयोग करके हम अपने वास्तविक रूप को छिपा सकते हैं तथा एक नवीन रूप धारण कर सकते हैं। ये मुखौटे भावों के मुखौटे हैं। जितने भाव उतने ही मुखौटे। मुखौटे की हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में बिना मुखौटे के नहीं रह सकता। निदा फाजली का एक शेर है-

"हर आदमी में होते हैं दस बीस आदमी जिसको भी देखना हो कई बार देखना"

ये 'दस बीस आदमी' ही मुखौटे का पर्याय हैं। कोई भी व्यक्ति अपने अनुसार जब चाहे जितने भी मुखौटे लगाकर अपने रूप को बदल सकता है।

मुखौटा लगाने के भिन्न-भिन्न कारण हो सकते हैं। कुछ लोग मुखौटे का प्रयोग इसलिए करते हैं ताकि वे अपने सुख-दुख, अमीरी-गरीबी, दोस्ती दुश्मनी आदि भावों को प्रदर्शित नहीं करना चाहते, जिससे वह अपनी वास्तविक स्थिति को मुखौटे के माध्यम से छिपा लेते हैं। किंतु मुखौटे का प्रयोग केवल वास्तविकता को छिपाने के लिए नहीं किया जाता, अपितु मनोरंजन, प्रदर्शन एवं वास्तविक स्थिति को दर्शाने के लिए भी किया जाता है। इसके अतिरिक्त मुखौटे विभिन्न माध्यमों द्वारा मानवीय भावों को यथार्थ रूप में भी समाज के समक्ष प्रस्तुत करते हैं।

अज्ञेय के अनुसार :- "मुखौटे केवल धोखा देने के लिए नहीं बल्कि सच्चाई को प्रस्तुत करने के लिए भी लगाए जाते हैं।"

जीवन के ये मुखौटे काल्पनिक हैं और रंगमंच में प्रयोग किए जाने वाले मुखौटे से भिन्न भी। अज्ञेय लिखते हैं कि- "साधारण जीवन में मुखौटा फरेब है, लेकिन नाटक में वही मुखौटा हमें यथार्थ में लौटा लाने में सहायक हो सकता है।"

मुखौटा दो प्रकार का होता है- काल्पनिक मुखौटा एवं कलाकारों द्वारा बनाया गया मुखौटा। दोनों मुखौटों का अंतर स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि "सामान्यतः व्यक्ति के अंदर भी एक अदृश्य मुखौटा होता है। एक तो वह जो वह दिखता है और एक वह जो वास्तव में होता है। सामान्यतः व्यक्ति अपनी मुखाभिव्यक्ति को छुपाने के लिये मुखौटे का प्रयोग करते हैं। जबकि कलाकार अपनी अनुभूतियों की बाह्य

अभिव्यक्ति हेतु विभिन्न रूपाकारों में मुखौटे का निर्माण करता है। विभिन्न माध्यमों में निर्मित मुखौटों से व्यक्ति उसके वातावरण और यथार्थ की प्रस्तुति सशक्त तरीकों से कर सकता है।"

मुखौटा' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग भरतमुनि द्वारा रचित नाटक के सबसे प्राचीन ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' में हुआ। यह कहा जा सकता है कि नाटक और मुखौटा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और दोनों ही एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं। नाट्यशास्त्र में चार प्रकार के नाटकों की चर्चा की गई है-वाचिक, आंगिक, आहार्य और सात्विक। मुखौटे का संबंध आहार्य से है।

मुखौटे के अवशेष प्राचीनकाल से ही मिलते हैं। कहा जाता है कि मुखौटे का प्रथम प्रयोग धातु मूलक रहा है जिसके अंतर्गत तंत्र-मंत्र और जादुई प्रभाव की केंद्रीयता है। आदिवासी लोग जंगलों में जानवरों का शिकार करने के लिए आत्मरक्षा हेतु मुखौटे पहनते थे।

"मुखौटों का प्राचीनतम इस्तेमाल आदिवासियों ने शिकार के समय जानवरों से अपना चेहरा छुपाने के लिए आत्म-सुरक्षा की दृष्टि से किया होगा।"

मुखौटे का प्रयोग भारत में विभिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न रूपों में देखा जा सकता है, जैसे-

"ओड़िशा के प्रह्लाद नाटक, भागवत मेल, महाराष्ट्र में दशावतार, राजस्थान में गवरी, गंबीरा, बिहार के विदापद नाच, असम के अंकिया नाट, तमिलनाडु के तेरेकुत्तू, उड़ीसा, बंगाल और झारखंड के छऊ, रामनगर की रामलीला में भी मुखौटों का प्रयोग होता है।"

मुखौटा-कला भारत में ही नहीं अपितु वैश्विक स्तर पर भी बहुत प्रसिद्ध है। भारत के साथ-साथ अफ्रीका, चीन, लंदन, जापान, ग्रीस, इंडोनेशिया आदि देशों में मुखौटे का प्रयोग कई तरह से होता है। जैसे-

"इनके अलावा चीन में रोगों के मुखौटे चिकित्सा के लिए, युद्ध के मुखौटे शत्रुओं में आतंक पैदा करने के लिए, प्रजनन और फसलों की वृद्धि के लिए किए जाने वाले अनुष्ठानों में भी मुखौटों का महत्वपूर्ण स्थान था। खेल-मुखौटों (हैलमेट) का प्रयोग तो आज भी खूब किया जाता है।"

इसके अतिरिक्त मुखौटे का प्रयोग रंगमंच, नृत्य, लोकनाट्य, उत्सवों, और खेतों में किया जाता है।

"मुखौटे लोकजीवन, लोकनृत्य और लोकनाट्य का तो हमेशा से अभिन्न अंग रहे ही हैं। लेकिन शास्त्रीय और आधुनिक नाटकों के साथ भी इनका बहुविध एवं गहरा रिश्ता रहा है। रूपक की बुनियादी शर्त है अभिनेता का रूपांतरण और नाटक तथा मुखौटा दोनों ही इस शर्त को समान रूप से पूरा करते हैं।"

मुखौटे को सामान्यतः तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है -

मानवीय मुखौटे - ये वे मुखौटे होते हैं जो जीवन में किसी सामान्य व्यक्ति से संबंधित होते हैं जैसे- किसान, कुम्हार आदि।

मानवेत्तर मुखौटे - इसके अंतर्गत भिन्न-भिन्न पशु-पक्षियों, जानवरों, पेड़-पौधे आदि के मुखौटे आते हैं। जैसे- शेर, कुत्ता, सियार, लोमड़ी, बकरी, भालू आदि।

आध्यात्मिक मुखौटे - इसके अंतर्गत कई देवी- देवताओं जैसे- हनुमान, गणेश, रावण, कुंभकरण, शूर्पणखा आदि आते हैं।

पश्चिम में मुखौटे के प्रयोग की शुरुआत यूनान में हुई। वहाँ मुखौटे का प्रयोग धार्मिक कर्मकांड के उपलक्ष्य में देवताओं की प्रतिमा को पूजने के लिए किया जाता था। इसमें मुखौटे को धारण करने से पूर्व उसकी पूजा की जाती थी। ईसा की छठी शताब्दी में मुखौटे का प्रयोग यूनानी रंगमंच में भी देखने को मिलता है।

"छठी शताब्दी ईसा पूर्व के यूनानी नाटककार स्पिस ने अपनी त्रासदी नाट्य रचनाओं के लिए पहले पहल रंगमंच पर मुखौटों का इस्तेमाल किया। मध्यकाल में 12वीं से 16वीं शताब्दी के बीच उभरे रहस्य-नाटकों में और 15वीं से 18वीं शताब्दी के बीच इटली से चलकर फ्रांस, जर्मनी और इंग्लैंड तक पहुँचे कमेडिया- देल- आर्ते के हास्य नाटकों में भी मुखौटों का भरपूर उपयोग होता रहा। जापान में 14वीं शताब्दी में लोकप्रिय हुए 'भोह नाटकों में 125 तरह के (सबके अलग-अलग नाम हैं) मुखौटों का प्रयोग किया जाता है।"

यूनान के प्रसिद्ध नाटककार 'अस्कुलस' है जिन्होंने ऐसे मुखौटों को बनाने की शुरुआत की जो चेहरे के साथ-साथ पूरा मुख भी ढक लेते हैं।

यहाँ हम कुछ विदेशी मुखौटों के बारे में जानेंगे।

आदिम मुखौटा- ये मुखौटे अफ्रीका में बनाए जाते हैं। तथा पितरों के प्रतीक के रूप में इनकी पूजा की जाती है।

शव मुखौटा- ये मुखौटे यूरोप में बनाए जाते हैं। इनका निर्माण सोने, चांदी, पीतल आदि धातुओं से किया जाता है। दफनाने की प्रक्रिया में इनका इस्तेमाल किया जाता है।

ममी मुखौटा - मिस्र में भित्ति चित्रों में देवताओं के मुखौटों का अंकन किया जाता है।

भारत में रंगमंच के अंतर्गत मुखौटे का प्रयोग सर्वप्रथम पूर्वोत्तर भारत के संतकवि श्रीमंत शंकरदेव ने अपने नाटकों में किया। उन्होंने अपने पहले नाटक 'चिह्नयात्रा' भाओना (नाटक का एक रूप) में मुखौटे का प्रयोग किया था।

"बांस-काठ के जरिये मुखौटे का निर्माण करके मंच पर व्यवहार करके दिखाने वाले पहले महान शिल्पकार हैं श्रीमंत शंकरदेव । उनसे पहले विश्व के किसी भी रंगमंच पर मुखौटे का इस्तेमाल करके नाटक प्रदर्शित करने का दृष्टांत देखने को नहीं मिलता है।"

आज के समय में मुखौटा कला वैश्विक स्तर पर

सभ्यता और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण तत्व है। इसे बनाने की प्रक्रिया काफी कठिन है। प्रत्येक कार्य के अनुसार मुखौटे भी भिन्न-भिन्न तरह के बनाए जाते हैं। जैसे-रंगमंच, नृत्य, लोक नाट्य आदि में अलग-अलग प्रकार के मुखौटे तैयार किए जाते हैं। इसके लिए स्थानीय सामग्री का ही प्रयोग किया जाता है। आमतौर पर मुखौटे मिट्टी, टैराकोटा, धातु, बांस, लकड़ी, कागज, पत्थर, सूत, हाथी दांत, आदि से तैयार किए जाते हैं।

मुखौटा बनाने के लिए सबसे पहले बांस की पतली-पतली पट्टियों से एक मुखाकार ढांचा बनाया जाता है। फिर उसके ऊपर मिट्टी में सने छोटे-छोटे

कपड़ों को उस ढांचे पर लगाया जाता है और धूप या छाया में उसे सूखने के लिए छोड़ दिया जाता है। जब वह पूरी तरह से सुख जाता है तो अंत में उसके ऊपर रंग-बिरंगे रंगों से कलाकारी की जाती है।

जंगलों में जानवरों का शिकार करने के लिए आदिवासी लोग पेड़ों की छाल, घास-फूस, पशु-पक्षियों के पंखों आदि वस्तुओं से अपने लिए मुखौटे तैयार करते हैं।

भारत में कई प्रकार के मुखौटा नृत्य भी होते हैं। कई स्थानों पर तो मुखौटा नृत्य, नृत्य का एक विशिष्ट रूप है। इसके अंतर्गत विभिन्न ऐतिहासिक, सामाजिक एवं पौराणिक लोककथाओं को नृत्य के रूप में लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। बीच-बीच में दर्शकों के साथ संवाद भी हो जाता है। इसकी एक अलग वेशभूषा होती है। सभी नृतक पात्रानुसार अपनी वेशभूषा ग्रहण करते हैं और उसी के अनुसार मुखौटा भी ग्रहण करते हैं।

इसकी खास बात यह है कि यह समाज में होने वाली विभिन्न स्थितियों जैसे राजनीति, जनविरोधी नीतियाँ एवं विभिन्न आडंबरों को भी संप्रेषित करते हैं। समाज के प्रत्येक वर्ग के लोग इस नृत्य में एक नृतक के रूप में भाग लेते हैं एवं सब साथ में देखते भी हैं। यहाँ हम कुछ ऐसे नृत्यों की चर्चा करेंगे जिसमें मुखौटे का प्रयोग होता है। जैसे -

छऊ नृत्य- यह पूर्वोत्तर भारत की एक परंपरा है तथा आदिवासियों द्वारा किया जाने वाला प्रसिद्ध नृत्य भी। इसके अंतर्गत रामायण, महाभारत एवं स्थानीय लोककथाओं के विभिन्न प्रसंगों को नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। लामा नृत्य- यह नृत्य किन्नौर के आदिवासी भिक्षुओं के द्वारा किया जाता है। इसका नृतक शेर के मुखौटे को धारण करता है। यह नृत्य भूत-प्रेत को भगाने एवं प्रकृति के प्रकोपों से बचने के लिए किया जाता है।

छाम नृत्य- यह एक आनुष्ठानिक नृत्य है। इसे लामाओं द्वारा पारंपरिक वस्त्रों और मुखौटे को धारण कर त्योहारों के अवसर पर किया जाता है।

पर्णाजागोर नृत्य यह नृत्य गोवा में किया जाने वाला मुखौटा नृत्य है। इसमें लड़की के मुखौटे का प्रयोग होता है। इसमें विभिन्न पशुओं, राक्षसों, देवताओं एवं आलौकिक शक्तियों का प्रदर्शन होता है।

याक नृत्य- याक (धन एवं समृद्धि का प्रतीक) नृत्य बौद्ध जनजातियों का प्रसिद्ध नृत्य है। यह नृत्य लोसर महोत्सव के उपलक्ष्य में याक को सम्मानित करने के लिए किया जाता है।

नृत्य के मुखौटे रंगमंच के मुखौटे से कुछ भिन्न होते हैं। इन मुखौटों को दो भागों में विभाजित किया जाता है।

द्योपत्तर- ये मुखौटे देव मुखौटे कहलाते हैं। जैसे- ईश्वर, राजा आदि

खयलारीपत्तर- ये मुखौटे मनोरंजन की श्रेणी में आते हैं।

नृत्य मुखौटे को बनाने के लिए केमू (शहतूत) या भोजपत्र के प्लेडों की पूजा करके बनाए जाते हैं। ये मुखौटे भिन्न-भिन्न पात्रों के अनुरूप ही बनाए जाते हैं ये मुखौटे विभिन्न गाँव में अट्ठारह प्रकार के होते हैं। जैसे-ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि। तो दूसरे कुछ स्थानों पर नृसिंह, गोपीचंद, राजा आदि। कुछ मुखौटा नृत्य और उनकी विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

भूतान का मुखौटा नृत्य ऐसा माना जाता है कि इस नृत्य को करने से पापों का नाश होता है। सभी बाधाएँ दूर हो जाती है तथा निर्वाण की प्राप्ति होती है।

सोंगी मुखौटा नृत्य यह नृत्य महाराष्ट्र में चैत मास की पूर्णिमा पर देवी पूजा में किया जाता है। इस नृत्य में असत्य पर सत्य की विजय का संदेश मिलता है। इसमें पारंपरिक व्रत पूजा होती है तथा पूजा के अंत में पशु की बली दी जाती है।

चौरियल मुखौटा नृत्य- ये मुखौटे तेलंगाना में स्थित हैदराबाद के पास बनाए जाते हैं। यह स्थान मुखशिल्प की वजह से प्रसिद्ध हैं। ये मुखौटे बड़े मुखौटों की अपेक्षा थोड़े छोटे हैं।

आदिवासी लोग मुखौटे के लिए 'मुखटा' शब्द का प्रयोग करते हैं। मुखौटे के द्वारा विश्व में रचनात्मक अभिव्यक्ति प्रकट की गई है। ये लोग मुखौटे का प्रयोग कई प्रकार से करते हैं जैसे-जंगलों में शिकार करने हेतु आत्म सुरक्षा के लिए, धार्मिक अनुष्ठानों के लिए, महामारियों, दुष्टात्माओं और विपदाओं से छुटकारा पाने के लिए, विवाह एवं त्योहारों के अवसर पर, कृषि के लिए, विभिन्न उत्सवों में, विभिन्न संस्कारों में, भूत-प्रेत भगाने के लिए, अपनी परंपराओं को बनाए रखने के लिए, तथा रोजगार आदि के लिए भी मुखौटे महत्वपूर्ण थे। कुछ उत्सव इस प्रकार हैं-

बारवस देवता की पूजा- यूनान में बारवस देवता की पूजा के लिए मुखौटे का प्रयोग होता है।

पदयनी उत्सव- यह उत्सव युद्ध का उत्सव है। यह देवी भद्रकाली का राक्षसों से युद्ध में विजय प्राप्त होने के अवसर पर मनाया जाता है। इसमें नृतक शिव का वेश धारण करके माँ भद्रकाली के समक्ष कोलम (मुखौटा) पहन कर नृत्य करते हैं एवं थप्पू (गीत) गाते हैं।

बोहड़ा उत्सव- यह उत्सव ठाणे और नासिक में तीन दिन के लिए आयोजित किया जाता है। यह उत्सव नागपंचमी, हनुमान जयंती आदि के अवसर पर किसी भी समय मनाया जा सकता है। इसमें भारतीय देवी-देवताओं के बावन प्रकार के मुखौटे लगाए जाते हैं।

कबायली उत्सव- इस उत्सव का आयोजन शाशुरगोम्पा (के लांग के ऊपरी टीले पर स्थित) में बौद्ध विरोधी प्रवृत्तियों से बचने के लिए किया जाता है। इसमें बौद्धभिक्षु एकत्र होकर मुखौटा धारण कर नृत्य करते हैं तथा इसे बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में भी माना जाता है।

रम्माण उत्सव- यह उत्सव उत्तराखंड के चमोली जिले में 11 या 13 दिन तक मनाया जाता है। इसमें लोक नाट्य, लोक नृत्य, गायन, देवयात्रा, परंपरागत पूजा, सामूहिक पूजा एवं कई अनुष्ठान होते हैं। इसमें होने वाले कुछ नृत्य इस प्रकार हैं-

1. बण्या-बण्याणनृत्य- इस नृत्य के अंतर्गत तिब्बती व्यापारियों द्वारा चोरी व लूटपाट की घटनाओं को प्रस्तुत किया जाता है।
2. म्योर-मुरेणनृत्य- इस नृत्य के माध्यम से पहाड़ों पर रहने वाले लोगों की दैनिक समस्याओं जैसे-लकड़ी लाने के समय किसी जंगली जानवर द्वारा आक्रमण की घटना को प्रस्तुत किया जाता है।
3. माल मल्ल नृत्य- इसमें स्थानीय लोगों और गोरखाओं के बीच युद्ध को नृत्य के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।
4. कुरु जोगी नृत्य- यह एक हास्य नृत्य है जो लोगों के मनोरंजन में सहायक है।

हिंदी रंगमंच में मुखौटे का प्रयोग बाल नाटकों में देखने को मिलता है। जिसमें सूरज, चांद, तारों, पशु-पक्षियों आदि की अभिव्यक्ति के लिए मुखौटे का प्रयोग होता था। इसके अतिरिक्त हम अन्य नाटकों में भी मुखौटे का प्रयोग देख सकते हैं।

गिरीश कर्नाड द्वारा रचित 'अग्नि और बरखा' नाटक के तृतीय अंक में जब नाटक मंडली 'इंद्र विजय' नाटक की तैयारी करती है, तो कर्ता नट अरवसू को वृत्तासुर का मुखौटा और वेशभूषा देने के अंदाज में बोलता है-

"यह लो। ये वृत्तासुर का मुखौटा है अब अपने आपको समर्पित कर दो इस मुखौटे को। समर्पित हो जाओ और इसी में चेतन को भरओ। हाँ, इतना ध्यान रहे, ज्यों ही तुम मुखौटे को जीवंत करते हो तो उस पर तुम्हें नियंत्रण भी साधना होगा। नहीं तो मुखौटा ही तुम पर चढ़ बैठेगा।"

तो अरब सुवृत्तासुर के अंदाज में बोलते हुए कहता है- "वृत्त! वृत्त! अकालों का असुर। नदियों को अपने उदर में निकल कर छुपा लेने वाले दानव मुझे भर। मैं एक कीट हूँ। अब बन जाने दे मुझेको सर्प अहि। आ मेरा जबड़ा बड़ा कर कि मैं इंद्र को निगल जाऊँ। मुझे जठराग्नि दे ऐसी कि इंद्र को पचा जाऊँ"

मुखौटे के माध्यम से एक ही व्यक्ति कई प्रकार के मुखौटे का प्रयोग करके भिन्न-भिन्न किरदारों को एक ही समय में स्वयं ही रंगमंच पर प्रस्तुत कर सकता है। 'लव एड लाइफ' नाटक के निर्देशक एस आई सामराक्कोडी लिखते हैं कि- "ये मेरा पहला प्रयोगवादी नाटक है जिसमें मैंने मुखौटों का इस्तेमाल किया है। पंद्रह चरित्रों के लिए पंद्रह मुखौटे रखे गए हैं जिन्हें तीन अभिनेता मंच पर उतारते हैं क्योंकि नाटक के तीन अभिनेता पंद्रह किरदार निभा रहे हैं तो वो पैंतीस बार अपने मुखौटे बदलते हैं।"

मोहन राकेश कृत आधे-अधूरे नाटक में भी यह बताया गया है कि सावित्री महेंद्रनाथ एवं अन्य तीन पुरुषों से मिलती है वे सब उसे अधूरे लगते हैं। वह किसी में संपूर्णता नहीं देख पाती। वह कहती है- "अलग-अलग मुखौटे, पर चेहरा? चेहरा सबका एक ही!"

इसके अतिरिक्त धर्मवीर भारती कृत 'अंधायुग' नाटक के तृतीय अंक में कौवे और उल्लू के मुखौटे का प्रयोग हुआ है। मोहन राकेश द्वारा रचित नाटक में भी हरिण-शावक के लिए मुखौटे का प्रयोग ही किया होगा।

लोक नाट्य जैसे दशहरे पर लगने वाले मेलों में रामायण के मंचन में सभी अभिनेता एक अलग किरदार में नजर आते हैं जिसमें वे रावण, हनुमान आदि का रोल करने के लिए मुखौटे का प्रयोग करते हैं। जिसमें वे अमूर्त को मूर्त रूप देते दिखाई पड़ते हैं। लोक नाट्य के संदर्भ में पृथ्वीराज कपूर लिखते हैं- "लोक-नाट्य, लोक मानस की अनुकरण मूलक प्रवृत्तियों का सहज प्रतिरूप कहा जा सकता है। पोथी ज्ञान और नागरिक सभ्यता से दूर पला हुआ लोक मानव जब देवी-देवता, भूत-प्रेत, राजा-रानी, जमींदार साहूकार आदि की नकलें उतारता है, चेहरे पर मुखौटे लगाकर या चुना कालिख पोत कर उनके स्वांग रचता है। तब लोक नाट्य एक अनगढ़ रूप में जन्म लेता है, और कालांतर में परंपरा पोषण द्वारा लोक रंजन की स्थाई निधि बन जाता है।"

लोक में नौटंकी भी काफी प्रचलित है, नौटंकी में भी मुखौटे का प्रयोग किया जाता है। नाटकों में मुखौटे का बहुत महत्व है जिसे निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है मुखौटे के माध्यम से मानव ही नहीं, अपितु मानवतर प्राणियों जैसे-पशु पक्षियों के किरदारों को भी रंगमंच पर दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है। इसके साथ-साथ एक ही व्यक्ति कई देवी- देवताओं के मुखौटे का प्रयोग कर रंगमंच पर आकर प्रदर्शित कर सकता है। मुखौटा केवल पात्रों की पहचान ही नहीं कराता अपितु उसके चरित्र की गहराई को भी स्पष्ट करता है। मुखौटे रंगमंच पर भिन्न-भिन्न भावों, विचारों और संवेदना को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि मुखौटा एक ऐसा आवरण है जो वास्तविक भाव को छुपाकर एक नई भाव-भंगिमा को मुखौटे के माध्यम से ग्रहण करता है। मुखौटा-कला प्राचीनकाल से चली आ रही है और वैश्विक स्तर पर हमारी सभ्यता और संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्व है तथा रोजगार के लिए भी बहुत उपयोगी है। इसके विविध आयाम हैं। इसका प्रयोग विशेष रूप से रंगमंच और लोकनृत्य में किया जाता है इसके अतिरिक्त लोकनाट्य में, भिन्न-भिन्न उत्सवों में, शिकार करने के लिए, धार्मिक कर्मकांड के

लिए, कृषि आदि के लिए भी यह बहुत महत्वपूर्ण है। वास्तुशास्त्र के अनुसार मुखौटे का प्रयोग घर की सजावट और समृद्धि के लिए भी किया जाता है।

सहायक ग्रंथ

- 1.चतुर्वेदी, प. सीताराम, भारतीय तथा पाश्चात्य रंगमंच, हिंदी समिति, सूचना विभाग, लखनऊ, 1964
- 2.तनेजा, जयदेव, आधुनिक भारतीय रंगलोक, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2006
- 3.सिंह, डॉ. योगेंद्र प्रताप, भारतीय भाषाओं में रामकथा : असमिया, भाषा-2,
- 4.सिंह, डॉ. योगेंद्र प्रताप, भारतीय भाषाओं में रामकथा : असमिया, भाषा-1, वाणी प्रकाशन, 2016
- 5.महतो, भुवनेश्वर, हिंदी एकांकी का रंगमंचीय अनुशीलन, अन्नपूर्णा प्रकाशन।
- 6.नसीम, कमल, ग्रीकनाट्य-कलाकोश, राजकमल प्रकाशन, 2009
- 7.भ्रमर, रवींद्र, हिंदी लोक नाट्य (पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रंथ) पृ. 9
- 8.राकेश, मोहन, आधे अधूरे (नाटक), राधाकृष्ण प्रकाशन, 2016
- 9.राकेश, मोहन, आषाढ़ का एक दिन, राजपाल एंड संस, 1997
- 10.कर्नाड, गिरीश, अग्नि और बरखा (नाटक), राधाकृष्ण प्रकाशन, 2019
- 11.भारती, धर्मवीर, अंधायुग, किताब महल, 2016

पत्रिकाएँ

- 1.प्रवाह पत्रिका, दिसंबर 2018-फरवरी 2018, अंक-35
- 2.अभिनव इमरोज, सितंबर-2019, अंक-9

विभिन्न चित्रों के संदर्भ

- चित्र-1 चतुर्वेदी, प. सीताराम, भारतीय तथा पाश्चात्य रंगमंच, हिंदी समिति, सूचना विभाग, लखनऊ, 1964
- चित्र-2 चतुर्वेदी, प. सीताराम, भारतीय तथा पाश्चात्य रंगमंच, हिंदी समिति, सूचना विभाग, लखनऊ, 1964
- चित्र-3 <https://www-jagran-com/punjab/chandigarh-masks-made-their-identity-19997978.html>

चित्र-4fp=k&4 <https://statemediaservice.com/tribal-dance-3/>

चित्र-5 <https://m.jagran.com/lite/bihar/gaya-start-dance-19945796.html>

चित्र-6 <https://artsandculture-google-com/exhibit/%E0%A4%B0%E0%A4%82%E0%A4%97%E0%A5%80%E0%A4%A8&%E0%A4%9A%E0%A5%87%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%AF%E0%A4%B2&%E0%A4%AE%E0%A5%81%E0%A4%96%E0%A5%8C%E0%A4%9F%E0%A5%87-dastkari-haat-samiti/uALSUSD-UCc-lw\hl%3Fhi>

चित्र-7 <https://artsandculture-google-com/exhibit/%E0%A4%B0%E0%A4%82%E0%A4%97%E0%A5%80%E0%A4%A8&%E0%A4%9A%E0%A5%87%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%AF%E0%A4%B2&%E0%A4%AE%E0%A5%81%E0%A4%96%E0%A5%8C%E0%A4%9F%E0%A5%87-dastkari-haat-samiti/uALSUSD-UCc-lw\hl%3Fhi>

चित्र-8 <https://m-bharatdiscovery-org/india/%E0%A4%A8%E0%A5%8C%E0%A4%9F%E0%A4%82%E0%A4%95%E0%A5%80\page%3F43>

मीनाक्षी

शोधार्थी, हिंदी विभाग,

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली